॥ श्रीः ॥

चौखम्बा सुरभारती ग्रन्थमाला

२०८

रूपचन्द्रिका

(शब्द एवं धातुरूपों का बृहत्संग्रह)

सम्पादक

डॉ० ब्रह्मानन्द त्रिपाठी

साहित्य - आयुर्वेद - आचार्य

एम्. ए., पी-एच्. डी., डी. एस-सी. ए.

प्रकाशक

चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन

वाराणसी

दो शब्द

प्राचीन परम्परा के अनुसार आरम्भ में बालक-बालिकाओं को शब्द तथा धातुरूपों का अभ्यास कराना संस्कृत शिक्षण की यह एक सुगम विधि रही है। अतएव माता-पिता या गुरुजन बचपन से ही इन्हें शब्द एवं धातुरूपों का अभ्यास कराया करते थे। जिससे ये सरलता से सीख लेते थे। फिर उन शब्दों के साथ धातुरूपों (क्रिया पदों) को जोड़नेकी विधि सिखला दी जाती थी, जिसके फलस्वरूप ये नन्हे-मुन्ने 'रामः गच्छति', 'बालकाः पठन्ति' 'इयं मम माता', 'अयं मम पिता', 'इदं मम गृहम्' इत्यादि वाक्यों को बिना किसी प्रयास के बोल लेते हैं, बोल सकते हैं, केवल थोड़ा संकेत करने की आवश्यकता होती है।

ध्यान रहे, छोटे बालक-बालिकाओं को घर का भूगोल पढ़ाना, सिखाना नहीं पड़ता। यह शिक्षा पहले उन्हें गोद में लेकर बाहर-भीतर लाने, ले जाने के रूप में माता-पिता, पास-पड़ोसी, संगी-साथी देते हैं, फिर वे स्वयं ठुमुक-ठुमुक चलकर सीख जाते हैं। ऐसे ही संस्कृत का उपदेश उन्हें अनायास माता-पिता, भाई-बहन चाहें तो दे सकते हैं। इसके लिये संस्कृत प्रेमी अभिभावकों को तदनुरूप वातावरण तैयार करने कराने की